अध्ययन सामग्री
बी॰ए॰ पार्ट 1
प्रश्नपत्र – द्वितीय
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच॰डी॰ जैन कॉलेज
वी॰कुं॰सिं॰वि॰, आरा

18·09·20

महाभारत

महाभारत का काल

महाभारत की रचना में व्यास के अतिरिक्त अन्य महापुरुषों का भी योगदान रहा है। इस की रचना एक दिन या एक वर्ष में नहीं समाप्त हुई बल्कि सदियों तक चलती रही। वर्तमान महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक प्राप्त होते हैं, इसलिए महाभारत को 'शतसाहस्री संहिता' कहा जाता है। किन्तु इस महाभारत का स्वरूप अनेक दशाओं को प्राप्त करने के अनन्तर निर्धारित हुआ है। गुप्तकाल तक महाभारत का वर्तमान स्वरूप निर्धारित हो चुका था, क्योंकि तत्कालीन शिलालेखों में महाभारत का उल्लेख 'शतसाहस्रीसंहिता' के नाम से ही किया गया है। यद्यपि वैदिक साहित्य महाभारत से अपरिचित है, किन्तु उत्तरवैदिक काल के साहित्य में महाभारत के पात्रों – परीक्षित, जनमेजय तथा अर्जुन एवं युधिष्ठिर आदि का नाम आ गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि व्यास ने इन्हीं वैदिक वीर-पुरुषों की वैदिक गाथाओं को आधार मानकर महाभारत का निर्माण किया।

महाभारत के विकास के तीन स्वरूप स्वीकार किए जाते हैं – i) जय ii) भारत iii) महाभारत

i) जय – प्रारम्भ में इस ग्रन्थ का नाम 'जय' था, यह महाभारत के ही श्लोकों से ज्ञात होता है →

"नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥"

Mc Donell का मत है कि प्रारम्भिक अवस्था में 'जय' नामक ग्रन्थ में केवल 8800 श्लोक थे। आख्यानों का पूर्णतः अभाव था। व्यास ने स्वयं लिखा है – 'जयनामेतिहासोऽयम्'। व्यास ने इसकी रचना स्वयं की तथा इसे अपने शिष्य 'वैशम्पायन' को सुनाया।

ii) भारत – द्वितीयावस्था में इसी ग्रन्थ का नाम 'भारत' पड़ा। जनमेजय के सर्पयज्ञ के समय 'वैशम्पायन' ने इसका पाठ 'जनमेजय' को सुनाया। जनमेजय के प्रश्न तथा वैशम्पायन के उत्तरों के कारण इसमें संवर्द्धन हो गया, तभी से इसका नाम 'भारत' पड़ा। इसमें 24000 श्लोक थे, फिर भी उपाख्यानों का अभाव रहा ⟶

"चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रेभारत संहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः॥"

iii) महाभारत – तृतीयावस्था में 'लोमहर्षण' के पुत्र सौति ने इसे शौनक को सुनाया, क्योंकि वे सर्पयज्ञ के अवसर पर इसे सुन चुके थे। सौति ने ही विविध आख्यानों, उपाख्यानों एवं कथाओं से संवलित करके इसे 'शतसाहस्रीसंहिता' का रूप दिया। इस शतसाहस्रीसंहिता का पाठ सौति ने ही सर्वप्रथम शौनक के द्वादशवर्षीय यज्ञ के अवसर पर किया। आश्वलायन गृह्यसूत्र में भारत के साथ 'महाभारत' का भी संगणन किया गया है।

महाभारत के विकास की रूपरेखा इसीलिए निर्धारित की जाती है, क्योंकि भाषा, शैली तथा छन्दों के मध्य पारस्परिक अन्तर इतना महान् है कि वह स्वयं महाभारत को विभिन्न व्यक्तियों की रचना सिद्ध कर देता है। महाभारत में जहाँ एक ओर परिष्कृत काव्य शैली प्राप्त होती है, वहीं आर्ष प्रयोगों तथा 'त्रिष्टुप्' आदि वैदिक छन्दों का भी अभाव नहीं है। अतः सिद्ध होता है विभिन्न दशाओं को पार करने के अनन्तर ही महाभारत का वर्तमान स्वरूप निर्धारित किया गया है। इतना तो निश्चित है कि महाभारत एक व्यक्ति की रचना नहीं है। अतः दो तथ्य सामने आते हैं-

1) महाभारत ने अपना वर्तमान स्वरूप कब धारण किया तथा
2) इसकी रचना कब हुई ?

महाभारत के काल-निर्णय के लिए यह अधिक उपयुक्त होगा कि पहले हम उसकी पूर्व-सीमाओं का विश्लेषण करें –

1/ विक्रमी संवत् 535 और 635 के लगभग 'जावा' और 'बाली' द्वीपों में महाभारत का अनुवाद वहाँ की प्राचीनतम कविभाषा में हो चुका था। कविभाषा में अनुदित आदि, विराट, उद्योग, भीष्म, आश्रमवासी, मुसल, प्रास्थानिक और स्वर्गारोहण- ये आठ पर्व आज भी वहाँ सुरक्षित हैं, जिनको कलकत्ता के संस्करण से मिलान करने पर लोकमान्य तिलक ने सर्वान्त शुद्ध बताया है। इससे प्रतीत होता है कि सातवीं शताब्दी तक महाभारत को इतनी लोकविश्रुति मिल चुकी थी कि उसका प्रचार विदेशों में होने लगा था।

2) गुप्तकालीन चेदी संवत् 197 (502 विक्रमी, 446 ई०) के उपलब्ध एक शिलालेख से प्रतीत होता है कि उस समय तक महाभारत एक लाख श्लोकों का स्वरूप धारण कर चुका था। अतः निश्चित है कि उसकी रचना इसके बहुत पहले हुई।

3/ शालिवाहन शक के आरम्भ उत्पन्न संस्कृत के एक सुपरिचित बौद्ध महाकवि अश्वघोष ने 'वज्रसूचिकोपनिषद्' नामक व्याख्यान-ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ को वेबर ने 1860 ई० में जर्मनी से प्रकाशित किया। इस ग्रन्थ में 'हरिवंश' और 'महाभारत' के श्लोक उद्धृत हैं। अश्वघोश के ग्रन्थ में उद्धृत उक्त दोनों ग्रन्थों के अंशों को पाकर न केवल इतना ही विदित होता है कि महाभारत का अस्तित्व इतना पुराना है, वरन् यह भी सिद्ध होता है कि ईसा की प्रथम शताब्दी में 'हरिवंश', 'महाभारत' के साथ सम्बद्ध होकर अपना वृहद् शत-साहस्री रूप धारण कर चुका था। अश्वघोष का समय 'ईसा की प्रथम शताब्दी सुनिश्चित है।

भास संस्कृत के सुपरिचित, सर्वाग्रणी और निपुण नाटककार हुए हैं। उनके अधिकांश नाटकों के कथानक महाभारत के उपाख्यानों से लिए गए हैं। अब प्रायः निश्चित सा हो गया है कि भास, कालिदास से पहले 300-400 ई०पू० में हुए। इससे विदित होता है कि 'महाभरत' का अस्तित्व भास से पहले था और

उसको तभी से एक उपजीवी ग्रन्थ माना जाने लगा था।

सुप्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में युधिष्ठिर, भीम, विदुर आदि भारत-युद्ध के चरित-नायकों का तथा 'महाभारत' ग्रन्थ का उल्लेख व्याकरणसम्मत व्युत्पत्ति के साथ किया। पाणिनि का स्थितिकाल ई०पू० पाँचवीं शताब्दी सुनिश्चित है। इस सम्बन्ध में यह सिद्ध हो चुका है कि पाणिनि के समय में 'महाभारत' था। महाभाष्यकार पतंजलि ने भी महाभारत युद्ध का वर्णन विस्तार से किया है। इनका समय 200 ई०पू० है।

6) यद्यपि पूर्ववैदिक साहित्य अर्थात् मन्त्र-संहिताओं में 'भारत' या 'महाभारत' का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है, तथापि उत्तरवैदिक साहित्य अर्थात् ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रन्थों में कुरुक्षेत्र, परीक्षित, जनमेजय और भरत आदि 'महाभारत' के चरित नायकों के नाम उल्लिखित हैं। वहाँ कुरुक्षेत्र को देवपूजा की पुण्यभूमि और सारे प्राणियों का उत्पत्ति-स्थान बताया गया है, 'तदनु देवानां देवयजनं तदनु सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम्'। कुरुक्षेत्र के उत्तरी भाग का नाम तूर्घ्न से अभिहित किया गया है।

इस प्रकार 'महाभारत' के मूल कथानक और उसमें वर्णित कुछ आख्यानों का ऐतिहासिक विश्लेषण कर उनकी प्राचीनता उत्तर-वैदिकयुगीन साहित्य (1000 ई०पू०) में सिद्ध की गई है। इस आधार पर 'महाभारत' के कालनिर्णय की पूर्व सीमा वैदिक युग तक पहुँचती है।

'महाभारत' की पूर्व सीमा का समीक्षण करने के बाद और उसकी उत्तर सीमा का निराकरण करने पर ही उसके निर्माण का ठीक अनुमान लगाया जा सकता है।

1) इस सम्बन्ध में पहला विचारणीय मत Hopkins का है। उन्होंने कुछ बाहरी साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि 'महाभारत' की अन्त्येष्टि चौथी शताब्दी ईस्वी के लगभग या इससे कुछ पूर्व हुई। Hopkins की आधारभूत सामग्री का निष्कर्ष निम्नलिखित है —

1) सुप्रसिद्ध दार्शनिक कुमारिल भट्ट ने अपनी कृतियों में 'महाभारत' के प्रायः सभी पर्वों को उद्धृत किया है और स्पष्ट शब्दों में उसे व्यासरचित एक विशालकाय स्मृतिग्रन्थ के रूप में स्मरण किया है। इनका समय 700 ई० है। अतः 700 ई० से पहले 'महाभारत' अपने वर्तमान रूप में सम्पन्न हो चुका था।

2) सुबन्धु और बाण ने भी 'महाभारत' को उद्धृत किया है। सुबन्धु का समय 600 ई० और बाणभट्ट का समय 650 ई० है।

3) कम्बोडिया से ~~प्राप्त~~ एक शिलालेख में 'महाभारत' का निर्देश है। यह शिलालेख 600 ई० का है। इस निर्देश से विदित होता है कि 600 ई० तक 'महाभारत' इतना यश अर्जित कर चुका था कि बाहरी देशों में भी उसकी ख्याति पहुँच चुकी थी।

4) कुछ दान-पत्र ऐसे प्राप्त हुए हैं जिनमें 'महाभारत' को स्मृतिरूप में स्वीकार किया गया है, उसको 'शतसाहस्त्री-संहिता' कहा गया है: 'शत-साहस्त्र्यां संहितायां वेदव्यासेनोक्तम्'। उसके श्लोक भी उनमें प्रमाण रूप में उद्धृत किए गए हैं। ये दानपत्र 500 ई० के पहले के हैं।

2) श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य ने 'महाभारत' के अन्तः साक्ष्यों के आधार पर सिद्ध किया है कि 'महाभारत' के मूलरूप का निर्माण 350-320 ई० पू० के बीच हो चुका था। वही महाभारत का वर्तमान रूप है।

3) कुछ विद्वानों के मत से 'महाभारत' एक ऐतिहासिक काव्य है और उसका आरम्भ यद्यपि 500 ई० पूर्व में हो चुका था, किन्तु उसका अन्त्येष्टि काल 400-500 ई० के लगभग है।

4) कालनिर्णय की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण बात का पता यह चलता है कि 'महाभारत' की नक्षत्र-गणना अश्विनी से न होकर कृत्तिका से है। मेष, वृष आदि राशियों का भी 'महा-

भारत' में कहीं उल्लेख नहीं है, जिससे विदित होता है कि भारत में मेष, वृष आदि राशियों के प्रचारक यूनानवासियों अर्थात् सिकन्दर के प्रवेश से पहले 'महाभारत' की रचना हो चुकी थी। 'महाभारत' में कहा गया है कि विश्वामित्र ने 'श्रवण' आदि की नक्षत्रगणना आरम्भ की थी। टीकाकार ने इसका अर्थ लगाया है कि उस समय 'श्रवण' नक्षत्र से उत्तरायण आरम्भ होता था। यह स्थिति शक सं० से 1500 वर्ष पहले की है। ज्योतिष के अनुसार उदगायन को एक नक्षत्र पीछे रहने में लगभग एक हजार वर्ष लग जाते हैं। इस हिसाब से महाभारत का रचनाकाल शक संवत् 500 वर्ष पूर्व ठहरता है। यही मत 'शंकर बालकृष्ण दीक्षित' का भी है।

5) डा० वेलबेल्कर ने 'महाभारत' की मुख्य कथा की रचना को बुद्ध से पूर्व (557-477 ई० पूर्व) माना है। कुछ विद्वानों को यह मान्य है कि उसके 'जय' और 'भारत' नाम से विख्यात संस्करणों का निर्माण बुद्ध से पहले हो चुका था।

'महाभारत' के अन्त: बाह्य साक्ष्यों और विभिन्न विद्वानों के मतों का विश्लेषण कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है कि उसकी पूर्व सीमा उत्तर वैदिक युग तक और अन्तिम सीमा ईसा की चौथी-पाँचवीं शताब्दी तक पहुँचती है।